SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कोविड–19 महामारी का भारत की सामाजिक–आर्थिक दशा पर प्रभाव

सुलेमान, शोधार्थी, भूगोल विभाग,
ख़्वाजा मुईन्नुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत
रवीद्र कुमार, भूगोल विभाग,
बख़्शी का तालाब इंटर कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

सुलेमान, शोधार्थी, भूगोल विभाग,
ख़्वाजा मुईन्नुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत
रवीद्र कुमार, भूगोल विभाग,
बख़्शी का तालाब इंटर कॉलेज,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 16/02/2022
Revised on : -----
Accepted on : 23/02/2022
Plagiarism : 05% on 16/02/2022

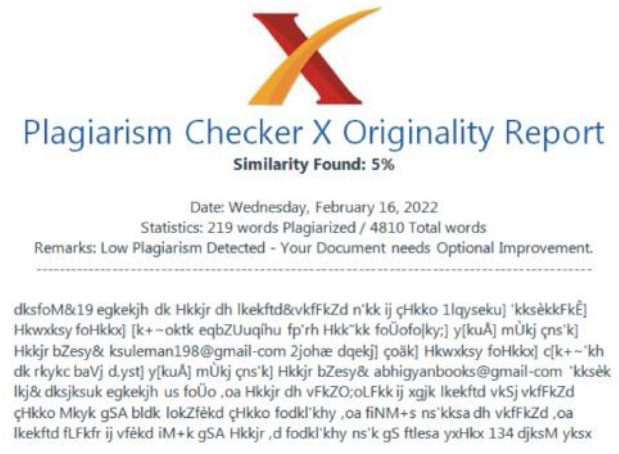
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 5%

Date: Wednesday, February 16, 2022
Statistics: 219 words Plagiarized / 4810 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

dksfoM&19 egkekjh dk Hkkjr dh lkekftd&vkfFkZd n'kk ij çHkko 1lqyseku] 'kksèkkFkÊ] Hkwxksy foHkkx] [k+~oktk eqbZUuqíhu fp'rh Hkk"kk foÜofo[ky;] y[kuÂ] mÜkj çns'k] Hkkjr bZesy& ksuleman198@gmail-com 2johæ dqekj] çoäk] Hkwxksy foHkkx] c[k+~'kh dk rkykc baVj d.yst] y[kuÂ] mÜkj çns'k] Hkkjr bZesy& abhigyanbooks@gmail-com 'kksèk lkj& dksjksuk egkekjh us foÜo ,oa Hkkjr dh vFkZO;oLFkk ij xgjk lkekftd vkSj vkfFkZd çHkko Mkyk gSA bldk lokZfèkd çHkko fodkl'khy ,oa fiNM+s ns'kksa dh vkfFkZd ,oa lkekftd fLFkfr ij vfèkd iM+k gSA Hkkjr ,d fodkl'khy ns'k gS ftlesa yxHkx 134 djksM yksx

शोध सार

कोरोना महामारी ने विश्व एवं भारत की अर्थव्यवस्था पर गहरा सामाजिक और आर्थिक प्रभाव डाला है। इसका सर्वाधिक प्रभाव विकासशील एवं पिछड़े देशों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति पर अधिक पड़ा है। भारत एक विकासशील देश है जिसमें लगभग 134 करोड़ लोग निवास करते हैं, यहां इसका प्रभाव अत्यंत ही व्यापक है। इस महामारी के कारण अनेक लोगों का रोजगार छिन गया, व्यापार बंद हो गया और उनकी आजीविका का जो भी साधन था सब खत्म हो गया है। इसके कारण भारत की कई करोड़ आबादी जो गरीबी रेखा से ऊपर उठ चुकी थी आज वह पुनः गरीबी रेखा से नीचे आ गई। भारत के जीडीपी के विकास दर जो 7 से 8 प्रतिशत थी वह अब –7 प्रतिशत के भी नीचे चली गई है। इसके कारण महंगाई अपने चरम पर पहुंच गई और आम आदमी का जीवन चलना दूभर हो गया है। इन सब का प्रभाव भारतीय लोगों की सामाजिक दशा पर भी पड़ रहा है। परिवारों में अंतरकलह, बच्चों का स्कूली शिक्षा से वंचित होना, गरीबी और बेरोजगारी, उत्क्रम प्रवास, रोजगार के अभाव में चोरी–डकैती की घटनाएं समाज में बढ़ गई हैं। इन सभी बातों का विस्तार से विवरण इस लेख के अग्रिम पृष्ठों पर किया जा रहा है।

मुख्य शब्द

अर्थव्यवस्था, सामाजिक, गरीबी, व्यापार, पर्यावरण, कोविड–19 महामारी.

प्रस्तावना

कोरोना वायरस या कोविड–19 का पहला मानवीय केस चीन के हुबेई प्रांत के वुहान शहर में दिसंबर 2019 में मिला था इसीलिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ)

ने इसे कोविड–19 नाम दिया। इसके पूर्व कुछ अन्य केस जोकि बुहान शहर के ही फूड मार्केट में मिले थे यह वे लोग थे जो फूड मार्केट में रोज आते थे या फूड मार्केट में काम करते थे। किंतु उनमें वायरस की पहचान नहीं हो पाई थी। सर्वप्रथम दिसंबर 2019 में फूड मार्केट के पर्यावरण का सैंपल लिया गया एवं जांच में पता चला कि वुहान शहर की पूरी फूड मार्केट सार्सकोव–2 नामक कोरोना वायरस से संक्रमित थी। पुनः बताया गया कि वहां की फूड मार्केट इस वायरस की उत्पत्ति स्रोत है अतः पूरी मार्केट को एक जनवरी 2020 से बंद कर दिया गया। कोविड–19 वायरस की पहचान जनवरी की शुरुआत में ही हो गई थी किंतु इसके वायरस की जीनोम अनुक्रम को सर्वप्रथम 11–12 जनवरी को सार्वजनिक किया गया। प्रारंभ में इसके चमगादड़ से फैलने के प्रमाण मिले थे, अतः निश्चित ही इस वायरस की उत्पत्ति प्राकृतिक है कृत्रिम नहीं। इसके पूर्व 2003 में एक अन्य कोरोना वायरस सार्सकोव–1 की पहचान दक्षिण अफ्रीका में हुई थी यह भी चमगादड़ से ही उत्पन्न हुआ था और इसके द्वारा भी श्वसन तंत्र ही प्रभावित होता था। कोरोना वायरस के मुख्य लक्षणों में बुखार, सूखीखांसी, सिरदर्द, श्वास लेने में तकलीफ, कमजोरी एवं शरीर दर्द आदि हैं।

भारत में कोविड–19 का पहला केस 27 जनवरी 2020 को केरल के त्रिशूल शहर में मिला था। एक 20 वर्षीय महिला इससे संक्रमित हुई थी, वह 23 जनवरी 2020 वुहान शहर से लौटी थी। यद्यपि वह बुहान शहर के फूड मार्केट में नहीं गई थी किंतु उसने बुहान से कुनमिंग शहर तक की यात्रा ट्रेन से की थी। उसने बताया कि ट्रेन में एवं स्टेशनों पर अनेक लोग सूखी खांसी से प्रभावित थे।

भारत में 28 फरवरी 2020 तक मात्र 3 केस ही करोना से संक्रमित थे, किंतु अगले 1 महीने में 30 मार्च 2020 को इनकी संख्या 1251 हो गई, इसी तरह 30 अप्रैल 2020 तक यह संख्या बढ़कर 31324 हो गई। पुनः अगले 1 महीने 30 मई 2020 में यह 181827 हो गई। अगले छह महीने में 1 जनवरी 2021 को यह बढ़कर 10303407 हो गई। अगले 6 महीनों में यह 30361699 हो गई और 30 दिसम्बर 21 को 44838804 पर पहुंच गई और 31 जनवरी 2022 कोरोना संक्रमितों की कुल संख्या की भारत में संख्या 41469499 हो गई है। अभी तक इस बीमारी से लगभग GOI, 2022)। विश्व में रिकॉर्ड मरीजों के साथ भारत संक्रमित मरीजों की संख्या के मामले में दूसरे स्थान पर है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका पहले स्थान पर है। इसने देश के सामाजिक, आर्थिक ताने–बाने को बुरी तरह से क्षति पहुंचाई है जिसका विवरण आगे के पृष्ठों में दिया गया है।

इस शोध पत्र में, कोविड़ 19 महामारी के कारण भारत के सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र पर पड़ने वाले गंभीर प्रभाव को उजागर करने का प्रयास किया गया है। इस लेख में हमने कई नवीनतम लेखों, प्रमाणिक समाचार पत्रों की लेखों, चर्चाओं तथा विशेषज्ञों के साक्षात्कार आदि की समीक्षा की है।

कोविड–19 का भारत की आर्थिक दशा पर प्रभाव

वर्तमान में, इस वायरस ने न केवल भारतीय अर्थवयवस्था को प्रभावित किया है, बल्कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों जैसे व्यापार, स्वास्थ्य, पर्यटन, रोजगार, बाजार, खाद्यान्न कमी एवं उत्पादन, संचार तथा सामाजिक दूरी तथा तालमेल आदि को इस महामारी ने प्रभावित किया है (The world bank, 2021)। इतना ही नहीं वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी नुकसान के चरम पर पहुंच गई है, जिससे देश, प्रदेश एवं लोग अपनी बर्बादी के कगार पर पहुंच गए हैं (Durante Ruben & Others, 2021)। इस वायरस की संक्रामक प्रकृति के कारण विश्व के सभी देशों ने पूर्णतया तथा सीमित लॉकडाउन अपने–अपने देशों में लगाया है। भारत ने भी शुरुआत में 22 मार्च 2020 को एक दिवसी ''जनता कर्फ्यू'' की घोषणा के साथ हुई। यहीं से, भारत में पहले 21 दिनों के लिए पूर्ण लॉकडाउन किया गया जिसे अतिरिक्त 19 दिनों के लिए बढ़ा दिया गया था तथा धीरे–धीरे यह और भी व्यापक कर दिया गया। 1 जून 2020 के बाद आंशिक छूट के साथ अनलॉक होना शुरू हुआ उसके बाद धीरे–धीरे कुछ पाबंदियों के साथ अर्थव्यवस्था को गति प्रदान की गई। चूंकि कई महीनों संपूर्ण पाबंदी से अर्थव्यवस्था पहले ही चरमरा गई थी तथा इसके सभी क्षेत्र बहुत बुरी तरह प्रभावित हो गए थे तथा जिसके कारण भारत की जीडीपी न्यूनतम स्तर पर पहुंच

गई (The World bank Report, 2021)।

1. कृषि और संबंधित गतिविधियाँ

कोविड–19 के प्रसार को रोकने के लिए अन्य देशों की तरह भारत ने भी मार्च 2020 में पूर्ण तालाबंदी कर दी। यह वह समय था जब रबी की फसलें पक कर कटने के लिए तैयार थी। इस समय सभी बड़े एवं छोटे किसानों के सामने बहुत सी चुनौतियां थी जैसे मजदूरों का रिवर्स माइग्रेशन, परिवहन की गतिशीलता बंद होना तथा बाजारों का बंद होना आदि। इन समस्याओं के चलते किसान कृषि उत्पाद जैसे सब्जियां, फल, दूध एवं अन्य को बाजारोन्मुख नहीं कर पा रहे थे जिससे किसानों को बहुत बड़ा आर्थिक झटका लगा। पंजाब, हरियाणा तथा महाराष्ट्र के बड़े किसानों ने तो यह भी कह दिया कि वर्तमान हालात 2016 में हुई नोटबंदी के दौरान जो स्थिति हुई उससे भी भयावह है (BharbateVikash& Others, 2021)

भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 60 प्रतिशत से अधिक लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है या उनका जीविकोपार्जन कृषि उत्पाद तथा उनसे अच्छा बाजार मिलने से होता है, किंतु कोविड–19 महामारी से संपूर्ण लॉकडाउन कई महीनों तक चला जिसके कारण किसानों एवं श्रमिकों को अच्छी बाजार नहीं मिली। सामान्यतः कृषि उत्पादन दो प्रकार के होते हैं: एक वह जो जल्दी खराब नहीं होते और उनको स्टोर करके भी रखा जा सकता है, जैसे गेहूं, आलू, धान, मक्का, बाजरा, दलहन, प्याज आदि। दूसरे वे जो जल्दी खराब हो जाती हैं तथा स्टोर भी ज्यादा समय तक के लिए नहीं किया जा सकता, जैसे सब्जियां, दूध, मांस, गन्ना, तंबाकू तथा फल आदि। इनमें उन किसानों को ज्यादा नुकसान उठाना पड़ा है जो दूसरे प्रकार की कृषि उत्पादों का उत्पादन कर रहे थे तथा पहले प्रकार वाली फसलों को भी अच्छी बाजार नहीं मिल पाई। हालांकि सरकार ने किसानों की कुछ मदद की है किंतु उनके नुकसान के मुकाबले ही यह मदद लगभग नगण्य है (NBT Report, 2021)।

2. विनिर्माण क्षेत्र

विनिर्माण क्षेत्र किसी भी देश की जीडीपी में महत्वपूर्ण योगदान करता है तथा अधिक रोजगार प्रदान करता है, जिस कारण विनिर्माण क्षेत्र को किसी भी देश की रीढ़ की हड्डी की संज्ञा दी गई है। विनिर्माण क्षेत्र इसलिए अधिक महत्वपूर्ण है कि अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्र से इसका गहरा संबंध है। यदि यह क्षेत्र किसी भी प्रकार से प्रभावित होता है तो यह अन्य क्षेत्रों को भी प्रभावित करेगा। इस महामारी के कारण इस क्षेत्र में मांग–आपूर्ति प्रभावित हुई है जिस कारण वैश्विक स्तर पर इससे जुड़े क्षेत्र निश्चित ही प्रभावित हो रही हो रहे हैं (Maria Nikola, 2020)।

कोरोना महामारी के कारण भारत में औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि दर भी प्रभावित हुई है। 2017–18 में औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि दर 4.6 प्रतिशत थी, इसी तरह 2018–19 में यह 3.9 प्रतिशत थी जो कोरोना वायरस के कारण 2019–20 में घटकर –1.40 प्रतिशत हो गई और 2020–21 में –9.6 प्रतिशत पर पहुंच गई जो औद्योगिक या विनिर्माण क्षेत्र में अब तक की सबसे बड़ी गिरावट है।

औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि दर

क्र. सं.	वर्ष	वृद्धि दर
1.	2017–2018	4.60
2.	2018–2019	3.90
3.	2019–2020	–1.40
4.	2020–2021	–9.60

(स्रोतः CEIC DATA 2021)

विनिर्माण क्षेत्र में 50 प्रतिशत योगदान करने वाला ऑटोमोबाइल क्षेत्र कोविड–19 आने से पहले कई चुनौतियां जैसे उपभोक्ता मांग, अपर्याप्त ऋण सुविधाओं तथा गैर–बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) के संकट से जूझ रहा था किंतु कोविड–19 के बाद से ऑटोमोबाइल सेक्टर की मांग–आपूर्ति अत्यधिक प्रभावित हुई है। एनडीटीवी (2020)

की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में 2019 के मुकाबले 2020 में ऑटोमोबाइल की मांग की दर में 50 से 55 प्रतिशत की भारी गिरावट दर्ज की गई है। इस रिपोर्ट में आगे भी मांग आपूर्ति को लेकर चिंता व्यक्त की गई है।

दशकों से चीन दुनियाभर के कुल विनिर्माण का एक तिहाई बनाने एवं आपूर्ति के लिए केंद्र रहा है, लेकिन कोविड–19 महामारी के बाद कई देश चीन से व्यापार बंद करके विकल्प के रूप में एक अन्य देश की तलाश में है जहां से समान मूल्य पर विनिर्माण क्षेत्र की वस्तुएं उपलब्ध हो सकें। ऐसे में भारत के लिए 'मेड इन इंडिया' को वैश्विक बनाने का सुनहरा अवसर है। भारत में सस्ता श्रम के साथ–साथ अनेक व्यापार संभावनाएं हैं अगर विनिर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए उचित कदम उठाए गए तो भारत चीन को पछाड़ एक नया विनिर्माण केंद्र बनकर उभरेगा।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSMEs) समग्र रूप से भारत में विनिर्माण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो रोजगार के अवसर प्रदान करने और देश के निर्यात में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय की हालिया रिपोर्ट के अनुसार भारत का यह क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद में 30 प्रतिशत और औद्योगिक श्रमिकों के रोजगार में 50 प्रतिशत का योगदान करते हैं। लेकिन यह क्षेत्र आवश्यकतानुरूप तथा समय पर पर्याप्त ऋण न मिल पाने की समस्या से जूझ रहा है। हालांकि वर्तमान में कोविड–19 महामारी से सभी व्यवसाय और क्षेत्र नकदी प्रवाह में कमी, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान, रिवर्स माइग्रेशन के कारण श्रमिकों की कमी, कम मांग आदि के कारण बुरी तरह से प्रभावित हुए हैं। इस महामारी से भारत में सूक्ष्म तथा लघु उद्योग बड़े स्तर पर बंद हो गए हैं या उनको अत्यधिक घाटा हुआ है (Durante Ruben & Other, 2021)। विश्व के कई अर्थशास्त्री और उद्यमी कहते हैं कि यदि एक बार उद्योग बंद हो जाए तो उनको दोबारा शुरू करना आसान नहीं होता है। जी–20 में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे शेरपा जी ने कहा कि वर्तमान स्थिति में छोटे उद्योग सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं तथा इस महामारी से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए यदि वित्तीय सहायता नहीं की गई तो यह उद्योग बंद हो जाएंगे या बर्बाद हो जाएंगे।

3. वित्तीय बाजार एवं अर्थव्यवस्था

वित्तीय क्षेत्र जो आर्थिक आपदा के समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत के इस क्षेत्र में पहले से ही ट्विन बैलेंस शीट (टीबीएस), उच्च स्तर की गैर निष्पादित संपत्ति (एनपीए) और अपर्याप्त पूंजीगत बैंकिंग प्रणाली जैसी समस्याएं रही है। निजी कारपोरेट क्षेत्र भी आर्थिक रूप से कमजोर है अधिक लेवरेज्ड है। IL और FS जैसी कुछ और समस्याएं भी है जिसमें वित्तीय वर्ष 2020 में पहली छमाही में लगभग 90 प्रतिशत वाणिज्यिक ऋण में गिरावट देखी गई तथा एक प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित निजी बैंक यस बैंक का पतन भी शामिल है (Ather Hassan Der, 2021)।

बैंकिंग क्षेत्र पर महामारी का कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं है, किंतु लोगों, बाजारों और विभिन्न उद्योगों के वित्तीय संबंध बैंकिंग क्षेत्र से होते हैं। चूंकि यह क्षेत्र अत्यधिक प्रभावित हुए हैं इसलिए बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थाओं पर अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ने की संभावना है। संकट के समय बैंक मदद का प्रमुख स्रोत होते हैं इसलिए जब अन्य क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित होंगे तो बैंकों को भी इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। वित्तीय क्षेत्र में पहले से मौजूद समस्याएं इस गंभीर संकट के कारण कई गुना बढ़ने की उम्मीद है। लॉकडाउन और विभिन्न व्यवसाय गतिविधियों के बंद हो जाने से 2020 में शेयर बाजार में भी सबसे खराब स्थिति देखी गई है।

कॉविड–19 महामारी के आने से पहले ही भारत की संपूर्ण अर्थव्यवस्था नोटबंदी एवं जटिल जीएसटी से मंदी के दौर से गुजर रही थी। द न्यू इंडियन एक्सप्रेस (2021) की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में नोटबंदी और जीएसटी के बाद से ही अर्थव्यवस्था में अप्रत्याशित मंदी देखने को मिली जिस कारण 2016 से 2019 तक लगातार प्रति व्यक्ति आय में गिरावट हुई। जनवरी 2020 में अर्थव्यवस्था में थोड़ी वृद्धि देखने को मिली जिस कारण कुछ उम्मीद की किरण जगी ही थी, किंतु इस महामारी के आगमन के बाद सारी उम्मीदें धराशाई हो गई तथा भारतीय अर्थव्यवस्था एवं लोगों को एक और बहुत बड़ा झटका लगा। भारतीय अर्थव्यवस्था तथा लोगों पर इसका प्रभाव इतना गंभीर हुआ कि बांग्लादेश जैसे गरीब देश के लोगों की तुलना में भारतीय लोगो की प्रति व्यक्ति आय कम हो गई।

4. सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर में भारी गिरावट

कोरोना महामारी का प्रभाव स्पष्ट रूप से भारत की सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर पर दिखाई पड़ता है नीचे तालिका में 2015 से 2022 तक के जीडीपी वृद्धि के आंकड़े दिए हैं इसके अनुसार 2016 में जीडीपी की वृद्धि दर 8.26 प्रतिशत थी 2017 में 6.80 प्रतिशत हो गई। 2018 में 6.53 प्रतिशत, 2019 में 4.04 प्रतिशत 2020 में कोरोना वायरस के कारण घटकर –7.96 प्रतिशत हो गई। इन आंकड़ों के आधार पर या पता चलता है कि भारत की जीडीपी पर कोरोना वायरस का कितना व्यापक असर हुआ।

क्र. सं.	वर्ष	जीडीपी वृद्धि दर
1.	2016	8.26
2.	2017	6.80
3.	2018	6.53
4.	2019	4.04
5.	2020	–7.96

(स्रोतः विश्व बैंक डाटा 2021)

कोविड–19 का भारत की सामाजिक दशा पर प्रभाव

1. लैंगिक भेदभाव और असमानता

एक शोध से पता चलता है कि वैश्विक स्तर पर कोविड–19 महामारी के कारण पुरुषों की तुलना में महिलाओं ने अपनी नौकरी अधिक खोया है (Chakraborty Soumitro, 2021)। भारत में भी कोविड–19 महामारी के दौरान पुरुषों की तुलना में महिलाओं ने रोजगार अधिक खोया है, यही नहीं रोजगार खोने वाली महिलाओं पर घरेलू कार्यों का दबाव भी बढ़ गया है। कोविड–19 से पूर्व जो महिलाएं रोजगार में थी वह घरेलू कार्यों में कम समय देती थी जबकि लॉकडाउन के बाद उनका रोजगार भी चला गया और घरेलू कार्यों में उनकी भूमिका प्रमुख हो गई। लॉकडाउन के बाद घरेलू कार्यों में पुरुषों का योगदान पूर्व की अपेक्षा औसतन आधे घंटे से 4 घंटे बढ़ गया है, फिर भी महिला पुरुष के कार्यों में स्पष्ट रूप से लैंगिक भेदभाव देखा जा सकता है (Sharma Samrat, 2021)।

अकुशल श्रमिकों, गरीबों, पिछड़े एवं कमजोर वर्गों पर कोविड–19 महामारी का प्रभाव देखते हुए कई अर्थशास्त्रियों का अनुमान है कि विभिन्न लोगों तथा क्षेत्रीय, प्रादेशिक, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर असमानता बढ़ेगी (Durante Ruben, 2021)। Durante Ruben (2021) बताते हैं कि समाज का वह वर्ग जो कम शिक्षित और कम कुशल है उसकी आय अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित होगी अपितु न्यूनतम हो जाएगी जबकि समाज का वह वर्ग जो अधिक शिक्षित है तथा अधिक कुशल है उसकी आय दुगनी हो जा सकती है, इसके परिणामस्वरूप असमानता में अत्यधिक वृद्धि होगी।

2. स्वास्थ्य संकट

कोविड–19 जैसी वैश्विक गंभीर महामारी में गरीब, पिछड़े देशों की ही नहीं स्वास्थ्य सुविधाएं चरमरा गई बल्कि उन सभी देशों की स्वास्थ्य सुविधाएं कम पड़ गई जो विकसित तथा स्वास्थ्य सुविधाओं में प्रमुख स्थान रखते थे। भारत भी उनमें से एक है जहां स्वास्थ्य सुविधाएं सभी क्षेत्रों में असमान रूप से विकसित है तथा जहां अपेक्षाकृत सामान्य आधारभूत संरचना कमजोर, डॉक्टरों की कमी, मेडिकल स्टाफ की कमी तथा स्वास्थ्य उपकरणों कमी की गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है, जिस कारण भारत पर कोविड–19 महामारी का गहरा प्रभाव पड़ा है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (2021) के अनुसार भारत में कोविड–19 महामारी के आने से पहले कुल जीडीपी का लगभग 1.4 प्रतिशत खर्च होता था जबकि महामारी के आने के बाद वर्ष 2020–21 में स्वास्थ्य सेवाओं पर कुल जीडीपी का क्रमशः 1.5 और 1.8 प्रतिशत खर्च किया गया है। कोरोना वायरस ने भारत के ग्रामीण और नगरीय दोनों क्षेत्र को प्रभावित किया है किंतु नगरी क्षेत्र में अधिक जन घनत्व होने के कारण यह क्षेत्र अधिक प्रभावित हुआ है। लेकिन भारत के ग्रामीण क्षेत्र के लिए बहुत गंभीर समस्या हो सकती है क्योंकि ग्रामीण भारत में

70 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है तथा ग्रामीण भारत में स्वास्थ्य सुविधाएं भी अल्पविकसित हैं। इस महामारी के कारण भारत में स्वास्थ्य सुविधाएं एक गंभीर मुद्दा बनकर उभरी है जिसको हमें विकसित करना होगा (Vyas Shaili& Others, 2021)।

3. घरेलू हिंसा और अपराध

25 मार्च 2020 से लॉकडाउन के कारण भारत के सभी लोग घरों में बंद थे, इसके 1 महीने बाद राष्ट्रीय महिला आयोग को मिलने वाली घरेलू हिंसा की शिकायतों की संख्या में 2019 के मुकाबले वृद्धि देखने को मिली। अधिकारिक आंकड़ों के अनुसार 2019 में महिलाओं के विरुद्ध किए गए अपराधों की कुल शिकायत की संख्या 19,730 मिली थी जबकि 2020 में यह संख्या बढ़कर 23,722 हो गई। एनसीडब्ल्यू की प्रमुख, रेखा शर्मा ने कहा की घरेलू हिंसा के मामलों में मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा और पंजाब आदि राज्यों में तेजी देखी गई। उन्होंने कहा कि वास्तविक स्थिति और भी भयावह हो सकती है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र की कई महिलाएं अपने पति और परिवार के डर से कोई शिकायत नहीं करती है।

एनसीडब्ल्यू के अनुसार भारत के लिए अच्छी खबर यह है कि लॉकडाउन के समय आने वाली शिकायतों में संख्या की दर वैश्विक तुलना में काफी कम है। आयोग की अध्यक्ष रेखा शर्मा ने कहा कि आर्थिक असुरक्षा, तनाव में वृद्धि, वित्तीय समस्याएं और परिवार की ओर से मिलने वाले भावनात्मक समर्थन की कमी आदि घरेलू हिंसा की घटनाओं में बढ़ोतरी का कारण हो सकते हैं (NBT Report, 2021)।

4. उत्क्रम प्रवास

भारत–पाकिस्तान विभाजन के बाद यह दूसरा सबसे बड़ा सामूहिक उत्क्रम प्रवास है जिसे भारतीय लोग बड़े शहरों से गांव की ओर अनुभव कर रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन (आईएमएम, 2021) ने उत्क्रम प्रवास को परिभाषित करते हुए कहा कि इस प्रवास में लोग अपनी जन्मभूमि या शहर से गांव की ओर बड़ी संख्या में पलायन करते हैं, जो शहर की ओर रोजगार की तलाश में तथा अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए आए थे।

भारत की जनगणना (2011) के अनुसार दिल्ली, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, उड़ीसा, असम, पंजाब, पश्चिम बंगाल तथा मध्य प्रदेश आदि राज्यों के प्रवासियों की सर्वाधिक संख्या थी। वर्तमान में कोविड–19 के मरीजों की बात करें तो महाराष्ट्र में सर्वाधिक संख्या हैं जबकि दिल्ली कुल मरीजों की संख्या में आठवें स्थान पर है (MoHFW, 2022)। वर्तमान में कोविड–19 के कारण अधिकतर लोगों ने अपनी नौकरी खो दी है तथा रोजगार के सीमित अवसर हो गए हैं जिस कारण लोग बड़े पैमाने पर रिवर्स माइग्रेशन कर रहे हैं। चूंकि इस महामारी ने अस्थिर भविष्य का निर्माण किया है जिसमें बेरोजगारी, वित्तीय संकट तथा स्वास्थ्य संकट ने एक गंभीर रूप ले लिया है। इन संकटों का इतना भयावह प्रभाव लोगों पर पड़ा है कि सरकार की नीतियों ने भी लोगों को उत्क्रम प्रवास करने से रोक नहीं पा रही है (Karthikeyan P Iyengar and Others, 2021)।

खान और अन्य (2021), ने भारत में प्रवासी श्रमिकों की दुर्दशा तथा भारत के ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर कोविड–19 के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने कहा कि कोविड–19 ग्रामीण अर्थव्यवस्था को दीर्घकालीन प्रभावित करने वाला है जिसमें रिवर्स माइग्रेशन कृषि तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर अतिरिक्त प्रभाव डालेगा, जो गरीबों को मुख्य रूप से प्रभावित करेगा तथा एक बड़ी आबादी गरीबी रेखा के नीचे चली जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि हालांकि सरकार कई योजनाओं की घोषणा कर रही है तथा विभिन्न तरीके से लोगों की मदद कर रही है लेकिन व्यवस्था में व्यापक भ्रष्टाचार तथा योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में कमी सबसे बड़ी चुनौतियां है।

5. गरीबी एवं बेरोजगारी

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार 2005–06 में भारत में करीब 64 करोड़ लोग गरीबी रेखा के नीचे थे लेकिन तत्कालीन राष्ट्रीय कांग्रेस सरकार ने महात्मा गांधी गारंटी ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम 2005 (मनरेगा) लागू किया, जिसके कारण गरीबों की स्थिति में अभूतपूर्व सुधार हुआ, क्योंकि 80 प्रतिशत गरीब गांव में रहते थे। वर्ष 2015–16 तक देश में कुल गरीब घटकर 36.9 करोड़ (27.9 प्रतिशत) रह गए थे। दैनिक भास्कर की एक रिपोर्ट

के अनुसार भारत में अप्रैल 2020 से अप्रैल 2021 के 1 साल में कोविड–19 के प्रभाव के कारण 23 करोड लोग गरीबी रेखा के नीचे चले गए। यानी जितने लोग पिछले 10 सालों में गरीबी रेखा से निकले थे लगभग उतने ही फिर से कोविड–19 महामारी के प्रभाव से गरीबी रेखा के नीचे चले गए। परिणामस्वरूप कोविड–19 कि 1 वर्ष में देश गरीबी के मामले में 8 से 9 साल पीछे चला गया है (दैनिक भास्कर, 2021)।

गरीबी

क्र. सं.	वर्ष	प्रतिशत
1.	1973–74	54.9
2.	1983–84	44.5
3.	1993–94	36.0
4.	2009–10	32.1
5.	2015–16	21.9
6.	2019–20	32.0 (अनुमानित)

(स्रोतः एशियन विकास बैंक डाटा 2019)

अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर एंप्लॉयमेंट की के रिपोर्ट ''स्टेट ऑफ वॉर्मिंग इंडिया 2021 वन ईयर ऑफ कॉविड–19" के अनुसार संगठित क्षेत्र में काम करने वाले 50 प्रतिशत से अधिक लोगों की नौकरी चली गई या सिर्फ सैलरी आधी हो गई है। इसी रिपोर्ट के अनुसार संगठित एवं असंगठित दोनों क्षेत्रों में रोजगार खोने का आंकड़ा देखें तो लगभग 122 मिलियन से अधिक हैं, जो काफी भयावह स्थित को दर्शाता है।

6. मनोवैज्ञानिक प्रभाव–मानसिक अवसाद/तनाव

स्वास्थ्य और आर्थिक संकट के अलावा महामारी की चपेट में आए हर देश के लिए मानसिक अवसाद/तनाव सबसे बड़ी चुनौती है। संपूर्ण लॉकडाउन के कारण बड़े पैमाने पर बेरोजगारी, विभिन्न व्यवसायों का पतन, आय की कमी, बढ़ती असमानता और गरीबी, मृत्यु तथा कम गतिशीलता आदि के कारण लोगों की मानसिक स्थिति पर बहुत गंभीर प्रभाव पड़ा है। इससे समाज का हर तबका चाहे वह गरीब हो या अमीर हर कोई प्रभावित हुआ है। इस महामारी के परिणामस्वरुप विश्व स्तर पर चिंता, तनाव, अवसाद, क्रोध, भय और इसी तरह के अतिरिक्त स्वास्थ्य मुद्दे पैदा हो रहे हैं (OEED Report, 2021)।

किसान और छोटे उद्यमी तो पहले ही जटिल जीएसटी और नोटबंदी जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे थे, किंतु जब से कोविड–19 महामारी आई है तब से लोगों की मानसिक स्थिति पर गंभीर प्रभाव पड़ा है। एनडीटीवी की एक रिपोर्ट के अनुसार जटिल जीएसटी और नोटबंदी से 2018 के बाद लोगों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में विपरीत परिवर्तन आया है जिस कारण पिछले वर्षों की तुलना में आत्महत्या की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई, किंतु जब इस महामारी से संपूर्ण लॉकडाउन लगा तो यह संख्या वर्ष 2020 में 1.53 लाख पहुंच गई, जिसमें 10,000 प्रत्यक्ष रूप से कृषि से जुड़े लोग थे। यह संख्या और भी भयावह हो सकती है क्योंकि इस तरह के मामले कई बार दर्ज ही नहीं होते है (NDTV Report, 2021)

इस महामारी ने समाज के उन लोगों की स्वास्थ्य को अधिक प्रभावित किया है जो कार्यशील नहीं है बल्कि निर्भर हैं जैसे वृद्ध और बच्चे। इस महामारी ने लोगों के बीच सामाजिक दूरी पैदा की है, जबकि जीवन की इस अवस्था में वृद्ध और बच्चों को लोगों के सहयोग और प्रेम की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। सामाजिक दूरी और असहयोग ने निर्भर लोगों की जिंदगी को कैद करके जेल में होने जैसा बना दिया है जिस कारण लोग मानसिक दबाव तथा तनाव जैसी गंभीर बीमारियों से जूझ रहे हैं। दूसरी ओर देखे तो स्कूल–कॉलेज अभी भी बंद है परिणामस्वरूप पढ़ाई में कई चुनौतियां उत्पन्न हुई हैं। ऐसे विद्यार्थी जो पढ़ाई में पहले से ही कमजोर हैं तथा वे सभी विद्यार्थी जिनके पास ऑनलाइन शिक्षण के लिए सुविधाएं नहीं है, विशेष रुप से लड़कियां तथा गांव में रहने वाले विद्यार्थी, इसका खामियाजा अधिक भुगत रहे हैं। OECD (2021) की रिपोर्ट के अनुसार इस महामारी के कारण

अनेक मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं जैसे पोस्ट टमैट्रिक स्ट्रेस डिसऑर्डर (पीटीएसडी), भ्रम, अकेलापन महसूस करना तथा बोरियत आदि उत्पन्न हुई हैं।

7. पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव

कोविड–19 ने अर्थव्यवस्था तथा लोगों के स्वास्थ्य को प्रभावित करते हुए जरूर एक अस्थिर वातावरण का निर्माण किया है किंतु इसकी वजह से संपूर्ण आर्थिक क्रियाओं पर ब्रेक लगने से पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। प्रोफेसर वी. डी. त्रिपाठी, अध्यक्ष, महामना मालवीय गंगा अनुसंधान केंद्र के अनुसार, भारत में कोविड–19 के कारण लॉकडाउन से केवल 30 से 35 दिनों में ही गंगा नदी के प्रदूषण में काफी कमी आई। उन्होंने कहा कि गंगा एक्शन प्लान (1986) तथा नमामि गंगे (2014) परियोजनाओं में करोड़ों खर्च करने पर जो ना हुआ वह मात्र कुछ दिनों के लाभ लॉकडाउन से हो गया।

दूसरी तरफ लॉकडाउन से यातायात और उद्योग लगभग बंद हो गए परिणामस्वरूप समस्त पर्यावरण जैसे वायु की गुणवत्ता, पानी की गुणवत्ता, वन्य जीवन और वनस्पति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है (Bharbate Vikash & Others, 2021)।

निष्कर्ष

कोविड–19 महामारी ने विश्व स्तर पर अभूतपूर्व नुकसान किया है, लेकिन विश्व में भारत जैसे विकासशील अर्थव्यवस्था को अधिक नुकसान उठाना पड़ा है। भारत की लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या कृषि एवं संबंधित गतिविधियों पर निर्भर है इसलिए इस क्षेत्र में देखा जाए तो बेशक उन कृषकों को ज्यादा नुकसान हुआ है जो ट्रक फार्मिंग करते हैं, जबकि अन्य फसलें उत्पादन करने वाले कृषक तुलनात्मक रूप से कम प्रभावित हुए हैं। वहीं भी निर्माण क्षेत्र खासकर ऑटोमोबाइल क्षेत्र एवं सूक्ष्म, लघु, मध्यम उद्योग क्षेत्र को ज्यादा नुकसान उठाना पड़ रहा है क्योंकि महामारी के कारण वैश्विक मांग–आपूर्ति अत्यधिक प्रभावित हुई है। सेवा क्षेत्र जो आर्थिक विकास की नींव है तथा सकल घरेलू उत्पाद में सर्वाधिक योगदान करता है, यह क्षेत्र गतिशीलता पर विभिन्न प्रतिबंधों, पर्यटन पर रोक, परिवहन गतिविधियों पर रोक तथा स्कूल एवं कालेजों आदि के बंद होने के कारण विभिन्न चुनौतियों से जूझ रहा है। इन सभी समस्याओं के चलते अर्थव्यवस्था पर गंभीर प्रभाव पड़ रहे हैं। इस महामारी ने अर्थव्यवस्था को ही प्रभावित नहीं किया है बल्कि गंभीर सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक चुनौतियां उत्पन्न की है। भारत में पहले से मौजूद गरीबी एवं असमानता के बढ़ने की संभावना है, जिसके परिणाम घरेलू हिंसा, प्रवास, आत्महत्या तथा मानसिक बीमारी आदि होंगे। हालांकि हमारे पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव जैसे वायु की गुणवत्ता बेहतर गुणवत्ता होना, विभिन्न जलाशयों की गुणवत्ता में सुधार तथा वन्य जीवो में वृद्धि आदि हुए हैं। सरकार एवं भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा इस संकट को कम करने के लिए विभिन्न नीतियां बनाई एवं घोषित की जा रही है, किंतु कई अर्थशास्त्रियों का मानना है यदि जीडीपी बेहतर करनी है तो सरकार को राजकोषीय घाटे की परवाह किए बिना लोगों की मदद करते हुए अधिक धन खर्च करना होगा। वास्तव में समाज के कमजोर वर्गों विशेष रूप से गरीबों, सूक्ष्म, कुटीर और लघु उद्योगों तथा विनिर्माण क्षेत्र पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, जो इस महामारी में सर्वाधिक प्रभावित हुए हैं। वर्तमान में भारत को कोविड–19 से उत्पन्न चुनौतियों और समस्याओं से निपटने के लिए बेहतर, समावेशी और अभिनव उपायों एवं समाधान की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. Coronavirus disease (COVID-19): Vaccines (7 October 2021),https://www.who.int/news-room/questions-and-answers/item/coronavirus-disease-(covid-19)-vaccines
2. WHO Coronavirus (COVID-19) Dashboard (7 january2022), https://covid19.who.int/
3. GOVERNMENT OF INDIA (2022), https://www.mygov.in/covid-19/
4. The world Bank (2021), The Global Economy: on Track for Strong but Uneven Growth as COVID-19 Still Weighs, https://www.worldbank.org/en/news/feature/2021/06/

08/the-global-economy-on-track-for-strong-but-uneven-growth-as-covid-19-still-weighs

5. WHO, (28 November 2021), Update on Omicron, https://www.who.int/news/item/28-11-2021-update-on-omicron
6. BarbateVikash& others (2021), COVID-19 and Its Impact on the Indian Economy, https://doi.org/10.1177/0972262921989126
7. The World Bank (2019), https://data.worldbank.org/indicator/NY.GDP.MKTP.KD.ZG?locations=IN
8. SBI, Report, 2021-2021, Informal sector shrank sharply in 2020-21: SBI report, https://www.thehindu.com/business/Economy/informal-sector-shrank-sharply-in-2020-21-sbi-report/article37270831.ece
9. Ather Hassan Dar (2021), The Efficiency of Indian Banks: A DEA, Malmquist and SFA Analysis with Bad Output, Journal of Quantitative Economics volume 19, pages653–701 (2021)
10. Chakraborty Saumitron (2021), Covid-19 aggravates gender inequality – Burning at the stake are women, https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/voices/covid-19-aggravates-gender-inequality-burning-at-the-stake-are-women/
11. Samrat Sharma (2021), Job loss in women-centric sectors, family care & more: Why young female workers were worst hit by Covid , https://www.indiatoday.in/diu/story/job-loss-in-women-centric-sectors-family-care-more-why-young-female-workers-were-worst-hit-by-covid-1870701-2021-10-28
12. Durante Ruben & Others (2021), Tracking the impact of COVID-19 on economic inequality at high frequency, Plos One, Published: March 31, 2021, https://doi.org/10.1371/journal.pone.0249121
13. Vyas Shaili& Others (2021), Repercussions of lockdown on primary health care in India during COVID 19, Journal of Family Medicine and Primary Care: July 2021 - Volume 10 - Issue 7 - p 2436-2440, doi: 10.4103/jfmpc.jfmpc_1991_20
14. NBT Report (2021), https://navbharattimes.indiatimes.com/india/domestic-violence-complaints-increase-during-lockdown/articleshow/81688693.cms
15. MoHFW (2022),https://www.mohfw.gov.in/
16. Karthikeyan P Iyengar& Others (2021), COVID-19 and the plight of migrants in India, BJM Journal, Volume 97, Issue 1149, https://pmj.bmj.com/content/97/1149/471
17. Asma Khan & H. Arokkiaraj (2021), Challenges of reverse migration in India: a comparative study of internal and international migrant workers in the post-COVID economy, Comparative Migration Studies volume 9, Article number: 49 (2021), https://comparativemigrationstudies.springeropen.com/articles/10.1186/s40878-021-00260-2
18. DainikBhaskar Report (2021), https://www.bhaskar.com/db-original/news/in-one-year-23-million-people-went-below-the-poverty-line-in-corona-between-2006-and-2016-27-million-people-in-10-years-had-come-out-of-the-poverty-line-128511920.html

19. UN, https://www.unglobalcompact.org/what-is-gc/our-work/social/poverty
20. OECD Policy Responses to Coronavirus (COVID-19), Tackling the mental health impact of the COVID-19 crisis: An integrated, whole-of-society response, 12 May 2021. https://www.oecd.org/coronavirus/policy-responses/tackling-the-mental-health-impact-of-the-covid-19-crisis-an-integrated-whole-of-society-response-0ccafa0b/
21. New Indian express(2021), Bangladesh beats India in per capita income,https://www.newindianexpress.com/business/2021/may/20/bangladesh-beats-india-in-per-capita-income-2304942.html
22. Maria Nicola & Others (2021), The socio-economic implications of the coronavirus pandemic (COVID-19): A review, Int J Surg. 2020 Jun; 78: 185–193. Published online 2020 Apr 17. doi: 10.1016/j.ijsu.2020.04.018
23. https://en.wikipedia.org/wiki/Economic_development_in_India
24. https://en.wikipedia.org/wiki/Economic_impact_of_the_COVID-19_pandemic_in_India
25. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC7646007/
26. https://www.ukibc.com/indias-socio-economic-priorities/
27. https://en.wikipedia.org/wiki/Economy_of_India#cite_note-99
28. https://www.ceicdata.com/en/indicator/india/industrial-production-index-growth

****